Gyanvividha, Vol.-3; Issue-1 (Jan.-March) 2026 : PP-266-277

ज्ञानविविधा

कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञान की सहकर्मी-समीक्षित, मूल्यांकित, त्रैमासिक शोध पत्रिका

ISSN : 3048-4537(Online)
3049-2327(Print)
IIFS Impact Factor-4.5
Vol.-3; Issue-1 (Jan.-March) 2026
Page No.- 266-277
©2026 Gyanvividha
https://journal.gyanvividha.com

Author's :

हेमलता पटेल

सहायक शिक्षक, काशीडीह, चन्द्रपुर, छत्तीसगढ़. शोधार्थी (शिक्षा), आई. एस.बी. एम., विश्वविद्यालय, गरियाबंद, छत्तीसगढ़.

Corresponding Author :

हेमलता पटेल

सहायक शिक्षक, काशीडीह, चन्द्रपुर, छत्तीसगढ़. शोधार्थी (शिक्षा), आई. एस.बी. एम., विश्वविद्यालय, गरियाबंद, छत्तीसगढ़.

आदिवासी कला के विविध आयाम : परंपरा, पहचान और सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ

सारांश : भारत की आदिवासी कला केवल सजावटी या मनोरंजक माध्यम नहीं है; यह सामाजिक संरचना, सांस्कृतिक पहचान और सामुदायिक मूल्य-प्रणाली का अभिन्न हिस्सा है (Béteille, 2006)। देश के विभिन्न आदिवासी समुदायों गोंड, भील, संथाल, उरांव, मुरिया, हो, कोरकू आदि की कलात्मक परंपराएँ उनके धार्मिक विश्वासों, प्रकृति के प्रति दृष्टिकोण, जीवन-संघर्ष और सामूहिक स्मृति को व्यक्त करती हैं। आदिवासी कला के विविध रूप चित्रकला, मूर्तिकला, शिल्पकला, वाद्यनिर्माण, लोकसंगीत, नृत्य और अन्य प्रदर्शन कलाएँ सदियों से मौखिक एवं व्यवहारिक परंपराओं के माध्यम से विकसित एवं संरक्षित होती आई हैं।

समकालीन परिप्रेक्ष्य में वैश्वीकरण, बाज़ारीकरण, तकनीकी विकास और सांस्कृतिक विनिमय ने आदिवासी कला के स्वरूप, उद्देश्य और अर्थ-व्यवस्था में महत्वपूर्ण परिवर्तन किए हैं। एक ओर पर्यटन, मीडिया और शहरी कला बाजार ने आदिवासी कलाकारों के लिए नए अवसर पैदा किए हैं, वहीं दूसरी ओर सांस्कृतिक प्रामाणिकता, व्यावसायीकरण और पहचान-चुनौतियों जैसी समस्याएँ भी उभरकर सामने आई हैं। इस शोध-पत्र का उद्देश्य आदिवासी कला के विविध आयामों का विश्लेषण करना, इसके सांस्कृतिक महत्व को रेखांकित करना, और सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ में इसकी भूमिका तथा आज की बदलती परिस्थितियों में इसकी सांस्कृतिक सततता पर विचार करना है। इस अध्ययन के माध्यम से यह समझ विकसित होगी कि आदिवासी कला केवल एक सौंदर्यपरक अभिव्यक्ति नहीं, बल्कि समुदाय की ऐतिहासिक चेतना, जीवन-दर्शन और सामूहिक अस्तित्व की जीवंत धरोहर है।

बीज शब्द : आदिवासी कला, सांस्कृतिक पहचान, परंपरा, सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ, सांस्कृतिक सततता, आदिवासी धरोहर, वैश्वीकरण।

1.परिचय : भारत की सांस्कृतिक विविधता में आदिवासी कला का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। देश की लगभग 705 जनजातियाँ अपनी विशिष्ट कलात्मक परंपराओं, प्रतीकों, मिथकों और सौंदर्यबोध के माध्यम से एक समृद्ध सांस्कृतिक विरासत प्रस्तुत करती हैं (Xaxa, 2014)। आदिवासी कला केवल अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं, बल्कि सामुदायिक भावना, धार्मिक विश्वास, पारंपरिक ज्ञान और प्रकृति-आधारित जीवनदृष्टि का प्रतिबिंब है। गोंड, वर्ली, संथाल, सोहराय, कोहबर, ढोकरा और बाँस-लकड़ी कला जैसे रूप विभिन्न क्षेत्रों की ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संवेदनाओं को दर्शाते हैं। ये कलाएँ जीवन-चक्र संस्कारों, त्योहारों और सामुदायिक अनुष्ठानों से गहराई से जुड़ी होती हैं (Berkes, 2012)।

समकालीन समय में आदिवासी कला वैश्वीकरण, शहरीकरण और डिजिटल माध्यमों के कारण नए अवसरों और चुनौतियों का सामना कर रही है। एक ओर अंतरराष्ट्रीय पहचान, बाज़ार और तकनीक ने कला को नए आयाम दिए हैं, वहीं दूसरी ओर व्यावसायीकरण, सांस्कृतिक प्रतीकों का क्षरण, और परंपरागत संदर्भों के कमजोर होने जैसी समस्याएँ उभर रही हैं। इन परिवर्तनों के बीच आदिवासी कला का अध्ययन केवल सौंदर्यशास्त्र तक सीमित नहीं, बल्कि समाजशास्त्रीय, मानवशास्त्रीय और सांस्कृतिक अध्ययन के लिए भी अत्यंत आवश्यक है। यह शोध-पत्र आदिवासी कला के बहुआयामी स्वरूप और बदलते सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ में उसकी भूमिका का समग्र विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

2. अध्ययन के उद्देश्य (Objectives of the Study)

1. आदिवासी कला के प्रमुख रूपों और उनके सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ का अध्ययन करना।
2. आदिवासी कला में परंपरा और आधुनिकता के बीच संतुलन की पहचान करना।
3. कला के माध्यम से आदिवासी पहचान और सांस्कृतिक सततता का मूल्यांकन करना।
4. आधुनिक परिवर्तनों वैश्वीकरण, पर्यटन और शहरीकरण के आदिवासी कला पर प्रभाव का विश्लेषण करना।

3. अनुसंधान पद्धति (Research Methodology) : यह अध्ययन गुणात्मक (Qualitative) और वर्णनात्मक (Descriptive) अनुसंधान पद्धति पर आधारित है, जिसका उद्देश्य आदिवासी कला के सामाजिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक आयामों को गहराई से समझना है। यह दृष्टिकोण कला के प्रतीकों, अर्थ-संरचनाओं और समुदाय-विशेष की सांस्कृतिक स्मृतियों को व्याख्यायित करने में प्रभावी है।

3.1 डेटा स्रोत (Data Sources)

द्वितीयक स्रोत:

• प्रकाशित शोध साहित्य, मोनोग्राफ, जर्नल लेख (Ghurye, 2010; Assmann, 2011)
• जनगणना रिपोर्टें, मंत्रालयीय दस्तावेज़
• मानवशास्त्रीय सर्वेक्षण रिपोर्टें, संग्रहालय अभिलेख एवं डिजिटल आर्काइव

प्राथमिक स्रोत:

• रायपुर एवं आसपास के क्षेत्रों में केस स्टडी
• एथ्नोग्राफिक सर्वेक्षण और प्रत्यक्ष अवलोकन
• कलाकारों, शिल्पकारों और विशेषज्ञों के अर्ध-संरचित साक्षात्कार

यह बहु-स्रोत पद्धति शोध को गहराई, प्रामाणिकता और विविधता प्रदान करती है।

3.2 सैद्धांतिक ढाँचा (Theoretical Framework)

• **सांस्कृतिक स्मृति सिद्धांत (Assmann, 2011):** कला को सामुदायिक स्मृति और प्रतीक-परंपरा के वाहक के रूप में विश्लेषित किया गया।
• **पारंपरिक पर्यावरणीय ज्ञान (Berkes, 2012):** कला में निहित प्रकृति-आधारित ज्ञान, सामग्रियों और तकनीकों की

भूमिका का अध्ययन किया गया।

3.3 डेटा विश्लेषण (Data Analysis)

• थीमेटिक विश्लेषण

• कला रूपों का प्रतीकात्मक एवं सांस्कृतिक विश्लेषण

• तुलनात्मक (Comparative) अध्ययन

• त्रिकोणिकरण (Triangulation) के माध्यम से निष्कर्षों की विश्वसनीयता सुनिश्चित की गई।

3.4 नैतिक विचार (Ethical Considerations)

• सूचित सहमति

• गोपनीयता संरक्षण

• सांस्कृतिक अधिकारों और संवेदनशीलता का सम्मान

4. आदिवासी कला के प्रमुख रूप और उनके सामाजिक-सांस्कृतिक आयाम : आदिवासी कला केवल कलात्मक अभिव्यक्ति नहीं, बल्कि आदिवासी जीवन-जगत, पर्यावरणीय संवेदना, आध्यात्मिक अनुभव और सामुदायिक संरचना का जीवंत दस्तावेज है। भारत के विभिन्न आदिवासी समुदाय अपनी विशिष्ट जीवनशैली, प्रकृति के प्रति सम्मान, मिथकीय चेतना और सांस्कृतिक निरंतरता को कला के माध्यम से जीवित रखते हैं। इस अध्याय में आदिवासी कला के विभिन्न रूपों का सामाजिक, सांस्कृतिक और प्रतीकात्मक आयामों सहित विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत है।

4.1 चित्रकला (Visual Arts / Wall Paintings) : आदिवासी चित्रकला दृश्य अभिव्यक्ति का सबसे प्राचीन स्वरूप है, जो प्राकृतिक प्रतीकों, पौराणिक कल्पनाओं और सामुदायिक अनुभवों को रूप प्रदान करता है।

मुख्य प्रकार :

(1) Gond Art

• गोंड समुदाय की यह चित्रकला रेखाओं, बिंदुओं और पैटर्न की विशिष्ट शैली के कारण अद्वितीय होती है।

• विषय-वस्तु में **वन्य जीवन, प्राकृतिक घटनाएँ, देव-आत्माएँ, पूर्वज** और दैनिक जीवन का सौंदर्य शामिल है।

• गोंड कला की संरचना मिथकीय कथाओं और पारंपरिक दंतकथाओं से जुड़ी है, जिससे कला में *कथात्मकता* का गहरा भाव उत्पन्न होता है।

(2) Warli Painting

• महाराष्ट्र के वर्ली समुदाय की यह कला अत्यधिक प्रतीकात्मक है, जिसमें **त्रिकोण, वृत्त और रेखाओं** का सीमित ज्यामितीय उपयोग होता है।

• प्रमुख विषय कृषि, पशुपालन, विवाह, उत्सव, शिकार, सामूहिक श्रम।

• भगवानों और प्रकृति-शक्तियों को सम्मान देने हेतु विभिन्न अनुष्ठानों और नृत्यों को भी दर्शाया जाता है।

(3) Sohrai and Khovar Art

• झारखंड-बिहार के आदिवासी समुदायों द्वारा घर की दीवारों पर बनाई जाने वाली **Sohrai कला**, पशुओं और प्रकृति की उर्वरता का प्रतीक है।

• **Khovar कला** विवाह व अन्य सामाजिक अनुष्ठानों से जुड़ी होती है, जिसमें कोयले और मिट्टी से विशिष्ट पैटर्न बनाए जाते हैं।

सांस्कृतिक आयाम :

• चित्रकला **सांस्कृतिक स्मृति** का वाहक है, जो समुदाय की उत्पत्ति, परंपरा और धार्मिक दर्शन को संरक्षित रखती है।

• चित्रण के माध्यम से पर्यावरण और मानवीय संबंधों का संतुलन प्रदर्शित किया जाता है।

• कई चित्रकला पद्धतियाँ **अनुष्ठानिक कला** के रूप में अस्तित्व में हैं—यह कला "सजावट" से कहीं अधिक, एक **जीवन-दर्शन** है।

4.2 मूर्तिकला और शिल्पकला (Sculpture and Handicrafts) : आदिवासी मूर्तिकला और शिल्पकला में प्रकृति की देन, पर्यावरणीय ज्ञान, और जीवन के व्यावहारिक पक्ष का अद्भुत संयोजन मिलता है।

मुख्य कृतियाँ:

(1) धार्मिक मूर्तियाँ और प्रतीक

• लकड़ी, मिट्टी, धातु और पत्थर से देव-देवियों, पूर्वजों और आत्मा-पात्रों की मूर्तियाँ बनाई जाती हैं।

• मूर्तियाँ केवल धार्मिक नहीं, बल्कि **सामुदायिक संरक्षण और समर्पण** को दर्शाती हैं।

(2) धातु शिल्प (Dokra / Dhokra Art)

• बेल मेटल से निर्मित **ढोकरा कला** अपनी "लॉस्ट वैक्स तकनीक" (cire perdue) के लिए विश्वविख्यात है।

• ढोकरा मूर्तियाँ माता-मूर्तियाँ, राजा-रानी, पशु, मानव आकृतियाँ आदिवासी सौंदर्यशास्त्र का प्रमाण हैं।

(3) बांस, लकड़ी और प्राकृतिक सामग्री पर आधारित शिल्प

• कृषि उपकरण, शिकार के औजार, बांस की टोकरियाँ, वाद्य यंत्र, घर सजाने के तत्व आदि बनते हैं।

• इनका निर्माण कौशल पीढ़ी-दर-पीढ़ी मौखिक और अनुभवजन्य तरीकों से अंतरित होता है।

सांस्कृतिक आयाम:

• शिल्पकला **आर्थिक आत्मनिर्भरता** का साधन है और वस्तुओं का सामूहिक उत्पादन सामुदायिक सहयोग को मजबूत करता है।

• पर्यावरणीय ज्ञान कौन सी लकड़ी टिकाऊ है, कौन सा धातु किस उपयोग में उपयुक्त है इन सबका उपयोग इस कला का अभिन्न पक्ष है।

4.3 संगीत और नृत्य (Music and Dance) : आदिवासी जीवन में संगीत और नृत्य सामाजिक संरचना, आध्यात्मिकता और सामूहिकता के गहरे प्रतीक हैं।

संगीत:

• गीतों में प्रकृति, ऋतुएँ, प्रेम, पीड़ा, युद्ध, फसल और धार्मिक अनुष्ठानों की गाथाएँ गाई जाती हैं।

• मुख्य वाद्ययंत्र **ढोल, मंदार, तुहिला, नागड़ा, बनाम और बांसुरी**।

• संगीत का उद्देश्य केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि **अनुष्ठानिक ऊर्जा** का निर्माण है।

नृत्य:

प्रमुख नृत्य रूप:

• **Karma Dance:** प्रकृति पूजा, विशेषकर 'कर्मा वृक्ष' की उपासना से संबंधित।

• **Saila Dance:** कृषि उत्सवों में संपन्न सामूहिक नृत्य।

• **Gaur Dance:** शक्ति, वीरता और सामुदायिक एकता का प्रतीक।

सांस्कृतिक आयाम:

• नृत्य-संगीत सामूहिकता की भावना को मजबूत करते हैं, जिससे समुदाय में सहयोग, भातृत्व और सामाजिक अनुशासन कायम रहता है।

• विवाह, harvesting, जन्म-मृत्यु और त्योहारों में इनकी भूमिका अनिवार्य होती है।

4.4 कहानी, मिथक और मौखिक परंपराएँ (Folk Narratives and Oral Traditions) : आदिवासी समाज का ज्ञान-संपदा मुख्यतः मौखिक माध्यम से संरक्षित है।

मुख्य रूप :

(1) लोककथाएँ और मिथक

• सृष्टि की उत्पत्ति, प्रकृति की शक्ति, पूर्वजों की वीरता और नैतिक मूल्यों से सम्बंधित कथाएँ।

• प्रत्येक समुदाय का अपना **मिथकीय ब्रह्मांड** है, जो सामाजिक नियमों और मानदंडों को वैधता प्रदान करता है।

(2) गीतात्मक कथाएँ और महागाथाएँ

• विवाह गीत, फसल गीत, वीरगीत और धार्मिक अनुष्ठानों में गाए जाने वाले गीत।

• इनका उद्देश्य सामुदायिक जीवन में **संस्कृतिकरण और शिक्षा** प्रदान करना है।

सांस्कृतिक आयाम:

• मौखिक परंपराएँ स्मृति, इतिहास और सामाजिक ज्ञान की निरंतरता बनाए रखती हैं।

• आधुनिक शिक्षा, तकनीक और मीडिया के आगमन से इन परंपराओं में परिवर्तन अवश्य आया है, लेकिन उनकी प्रतीकात्मकता अब भी मजबूत है।

4.5 आदिवासी कला में लिंग और समाज की भूमिका (Gender and Social Roles in Tribal Art)

महिलाओं की भूमिका:

• महिलाएँ चित्रकला, दीवार-सजावट, मिट्टी के बर्तन, गीत, नृत्य और आभूषण-निर्माण की मुख्य वाहक हैं।

• कई अनुष्ठानिक कलाएँ केवल महिलाओं द्वारा ही की जाती हैं, जिससे उनका **सांस्कृतिक नेतृत्व** स्पष्ट होता है।

पुरुषों की भूमिका:

• शिकार, युद्ध और शक्ति-पहलुओं से संबंधित कला मूर्तिकला, ढोल वादन, सामूहिक नृत्य संचालन।

• सामुदायिक अनुष्ठानों के दौरान पुरुषों का नेतृत्व प्रमुख होता है।

सामाजिक संरचना:

• कला कौशल उम्र, अनुभव और सामुदायिक स्थिति के आधार पर विकसित किया जाता है।

• बुजुर्गों की भूमिका कथाएँ सुनाना, अनुष्ठानों का मार्गदर्शन, सांस्कृतिक विरासत का संप्रेषण।

4.6 आधुनिकता और आदिवासी कला में परिवर्तन (Modernity and Transformation in Tribal Art)

परिवर्तन के प्रमुख आयाम:

(1) वैश्वीकरण और पर्यटन

• आदिवासी कला को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान मिलने से आर्थिक अवसर बढ़े हैं।

• परंतु व्यावसायीकरण के चलते कई बार **प्रामाणिकता और प्रतीकात्मक अर्थ** कमजोर पड़ जाते हैं।

(2) डिजिटल मीडिया

• कला के दस्तावेजीकरण, प्रशिक्षण और प्रचार के नए मंच उपलब्ध हुए हैं।

• युवा पीढ़ी अब डिजिटल माध्यम से अपनी कला को वैश्विक मंच पर प्रस्तुत कर रही है।

(3) शहरीकरण और आधुनिक डिजाइन

• पारंपरिक विधियों में आधुनिक डिज़ाइन का मिश्रण देखा जा रहा है।

• नए बाजारों के लिए कला का पुनराविष्कार और रूपांतरण हो रहा है, जिससे कला की **बहुलता और अनुकूलनशीलता** बढ़ी है।

सांस्कृतिक आयाम:

• आधुनिकता का प्रवेश विनाशकारी नहीं, बल्कि **संक्रमणशील और नवोन्मेषी** है।

• पारंपरिक कला नए प्रसंगों में भी "सांस्कृतिक पहचान" की रक्षा करती रहती है।

5. आदिवासी कला का सामाजिक-सांस्कृतिक महत्व : आदिवासी कला एक जीवंत सांस्कृतिक विरासत है जो समुदाय की सामाजिक संरचना, आध्यात्मिक दृष्टिकोण, पर्यावरणीय सामंजस्य और ऐतिहासिक चेतना को आकार

देती है। यह कला न केवल सौंदर्य-अभिव्यक्ति का माध्यम है, बल्कि आदिवासी समाज की **सामूहिक स्मृति, सामुदायिक जीवन और सांस्कृतिक निरंतरता का आधार स्तंभ** भी है। कला रूपों के भीतर बुना गया मिथकीय, प्रतीकात्मक और सामाजिक ज्ञान आदिवासी जीवन को एक अनूठी सांस्कृतिक पहचान प्रदान करता है।

5.1 सांस्कृतिक पहचान (Cultural Identity) : आदिवासी कला समुदाय के लिए एक **जीवंत सांस्कृतिक पहचान** का निर्माण करती है, जो उनके मूल्यों, विश्वासों और जीवन-दर्शन को प्रतिबिंबित करती है।

मुख्य आयाम:

• **सांस्कृतिक प्रतीकात्मकता :** प्रत्येक समुदाय की कला शैली जैसे **गोंड की रेखा-शैली**, **वारली की ज्यामितीय आकृतियाँ**, **सोहराय की पशु-आकृतियाँ** उनकी विशिष्ट सांस्कृतिक पहचान को दर्शाती है।

ये प्रतीक न केवल सौंदर्य की दृष्टि से विशेष हैं, बल्कि समुदाय की **आध्यात्मिक चेतना और विश्व-दृष्टि** का प्रतिनिधित्व करते हैं।

• **इतिहास और स्मृति का संरक्षण :** आदिवासी कला में प्रयुक्त आकृतियाँ, रंग और चिह्न उनके **पूर्वजों, पौराणिक कथाओं और ऐतिहासिक अनुभवों** को रूप देते हैं।

इस प्रकार कला "सांस्कृतिक स्मृति" (cultural memory) का माध्यम बनती है, जो Assmann (2011) के अनुसार सामाजिक निरंतरता का मूल साधन है।

• **समुदाय और परंपरा के बंधन का निर्माण :** कला के माध्यम से समुदाय के सदस्य अपने अतीत, मिलकर किए जाने वाले कार्यों और साझा मान्यताओं से जुड़े रहते हैं।

यह जुड़ाव उन्हें मुख्यधारा समाज में सांस्कृतिक रूप से अदृश्य होने से बचाता है।

• **पीढ़ियों के बीच संवाद :** चित्रकला, मौखिक कथाएँ, नृत्य और शिल्प ये सभी परंपराएँ पीढ़ी दर पीढ़ी ज्ञान और पहचान को हस्तांतरित करती हैं।

इससे पूरे समुदाय में सांस्कृतिक निरंतरता बनी रहती है।

5.2 सामाजिक-सामूहिक संरचना (Social and Communal Structure) : आदिवासी कला सिर्फ व्यक्तिगत रचना नहीं, बल्कि **सामूहिकता और सहयोग का जीवन्त प्रतीक** है।

मुख्य आयाम :

• **सामुदायिक सहयोग का निर्माण :** नृत्य, संगीत, शिल्प निर्माण और उत्सव सामूहिक रूप से किए जाते हैं, जिससे समूह के सदस्यों में **एकता, सहभागिता और सामंजस्य** की भावना बढ़ती है।

Béteille (2006) के अनुसार, आदिवासी समुदायों में सामाजिक संरचना सहयोग और सामूहिक श्रम पर आधारित होती है, जिसे कला निरंतर सशक्त करती है।

• **अनुशासन और सामाजिक नियमों की स्थापना :** नृत्य और संगीत के निर्धारित क्रम और संरचनाएँ सामुदायिक अनुशासन विकसित करती हैं।

इन कलाओं में भागीदारी सामाजिक तौर पर स्वीकार्य भूमिकाओं और जिम्मेदारियों को सुदृढ़ करती है।

• **कौशल और श्रम विभाजन :** शिल्पकला और पारंपरिक औजार निर्माण में परिवार और समुदाय के विभिन्न सदस्यों की अलग-अलग भूमिकाएँ होती हैं, जिससे श्रम का संतुलन और सहयोग सुनिश्चित होता है।

कौशल का यह विभाजन सामुदायिक जीवन की स्थिरता को बनाए रखता है।

• **सामूहिक उत्सव और सामाजिक एकता :** त्योहारों के दौरान कला-आधारित गतिविधियाँ जैसे-नाच, गीत, चित्रकला सामूहिक आनंद का वातावरण बनाती हैं।

इससे समुदाय में "हम-भावना" (we-feeling) को मजबूती मिलती है।

5.3 पारंपरिक ज्ञान और पर्यावरणीय समझ (Traditional Knowledge and Ecological Wisdom) :

आदिवासी कला प्रकृति के साथ गहरे, सहजीवी (symbiotic) संबंध का मूर्त रूप है।

मुख्य आयाम:

• **प्रकृति से प्रेरित प्रतीकवाद :** पशु-पक्षी, पेड़-पौधे, पहाड़, आसमान, मौसम ये सभी आदिवासी कला में प्रमुखता से दिखाई देते हैं।

यह केवल चित्रण नहीं, बल्कि पर्यावरण के प्रति **सम्मान, समझ और आध्यात्मिक संबंध** का प्रतीक है।

• **कृषि और प्राकृतिक चक्रों का ज्ञान :** कर्मा नृत्य, सारहुल उत्सव, फसल गीत और शिकार से संबंधित कलाएँ मौसम और कृषि चक्रों पर आधारित होती हैं।

Berkes (2012) के अनुसार, आदिवासी ज्ञान प्रणालियाँ स्थानीय पारिस्थितिकी के साथ गहरे सामंजस्य में कार्य करती हैं।

• **प्राकृतिक संसाधनों का संतुलित उपयोग :** बांस, लकड़ी, मिट्टी, धातु इन सबका उपयोग कला में इस प्रकार किया जाता है कि **सततता (sustainability)** बनी रहती है।

आदिवासी कलाकार सामग्री के उपयोग में पारिस्थितिक सीमा और संतुलन का पालन करते हैं।

• **पर्यावरणीय शिक्षा :** कथाएँ, गीत और चित्रकला बच्चों और युवाओं को पर्यावरणीय समझ और प्रकृति संरक्षण के मूल्यों से परिचित कराती हैं।

इस प्रकार कला पर्यावरणीय शिक्षा का एक अनौपचारिक लेकिन प्रभावी माध्यम है।

5.4 सांस्कृतिक सततता (Cultural Sustainability) : आदिवासी कला सांस्कृतिक सततता का महत्वपूर्ण आधार है क्योंकि यह समुदाय को बदलते समय में भी अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जोड़े रखती है।

मुख्य आयाम:

• **परंपरा का संरक्षण :** गीत, नृत्य, पेंटिंग, कथाएँ ये सभी 'जीवित परंपराएँ' हैं जो निरंतर पुनरुत्पन्न होती रहती हैं।

इससे संस्कृति स्थिर नहीं रहती, बल्कि **गतिशील और अनुकूलनशील** बनी रहती है।

• **महिलाओं की भूमिका :** महिलाएँ आदिवासी संस्कृति की धरोहर को संरक्षित रखने में केंद्रीय भूमिका निभाती हैं।

वे वस्त्र निर्माण, मिट्टी कला, अनुष्ठानिक गीतों और दीवार-पेंटिंग के माध्यम से सांस्कृतिक ज्ञान को आगे बढ़ाती हैं।

• **आधुनिकता और वैश्विक पहचान :** डिजिटल मीडिया, पर्यटन और बाजार ने आदिवासी कला के प्रसार के नए अवसर प्रदान किए हैं।

हालाँकि इससे शैलीगत परिवर्तन हुए हैं, पर Throsby (2018) के अनुसार, कला की यह वैश्विक पहचान लंबे समय में सांस्कृतिक सततता को ही सशक्त करती है।

• **अंतर-सांस्कृतिक संवाद :** आधुनिक युग में आदिवासी कला और मुख्यधारा कला के बीच संवाद बढ़ा है, जिसने कलात्मक प्रयोगों और नई पहचान-निर्माण प्रक्रियाओं को जन्म दिया है।

6. आदिवासी कला के केस स्टडी : भारत के विभिन्न राज्यों में आदिवासी कला के रूपों में भौगोलिक, सामाजिक और सांस्कृतिक विविधता देखने को मिलती है। ये केस स्टडी न केवल कला की शैली का परिचय देती हैं, बल्कि यह भी स्पष्ट करती हैं कि कैसे आधुनिकता, बाजार-आधारित अर्थव्यवस्था और नीतिगत हस्तक्षेप इन पर प्रभाव डालते हैं।

6.1 बस्तर (छत्तीसगढ़): गहरी सांस्कृतिक परंपरा और सामूहिक जीवन का केंद्र

ऐतिहासिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि : बस्तर क्षेत्र लंबे समय से गोंड, मुरिया, माड़िया और हल्बा जैसी जनजातियों का घर रहा है। इन समुदायों की कला, नृत्य और शिल्प उनकी सामाजिक संरचना और आध्यात्मिकता का अभिन्न हिस्सा हैं।

मुख्य कला रूप :

• **गोंड और मुरिया चित्रकला :** यह चित्रकला प्रकृति, वन-जीवन, मिथकीय पात्रों, देवताओं और आजीविका संबंधी

गतिविधियों को दर्शाती है।
रेखा-शैली (Line-based pattern) और बिंदु-शैली (Dot-work) इसकी विशेष पहचान है।
• **बस्तर धातुकला (Dokra Art) :** यह एक विशिष्ट 'लॉस्ट-वैक्स' तकनीक पर आधारित धातु-शिल्पकला है। देवी-देवताओं, दैनिक जीवन के दृश्य और पशु आकृतियाँ मुख्य विषय हैं।
• **घोटुल प्रणाली :** मुरिया समुदाय का घोटुल एक **सामाजिक-शैक्षणिक केंद्र** है जहाँ युवाओं को नृत्य, गीत, शिल्पकला और सामाजिक कौशल सिखाए जाते हैं। यह परंपरा समुदाय की एकता को बनाए रखने में अत्यंत महत्वपूर्ण है।

सामाजिक संरचना पर प्रभाव :
• घोटुल और सामूहिक नृत्य समुदाय में **अनुशासन, सहयोग और युवाओं की सामाजिक जिम्मेदारी** को स्थापित करते हैं।
• कला गतिविधियाँ सामूहिक श्रम और उत्सवों को एकीकृत करती हैं।

आधुनिक चुनौतियाँ:
• पर्यटन और बाहरी बाजार के बढ़ते प्रभाव से पारंपरिक प्रतीकों की जगह अधिक **वाणिज्यिक और लोकप्रिय शैली** लेने लगी है।
• औद्योगिक परियोजनाओं और खनन से कुछ आदिवासी बस्तियाँ विस्थापित हुईं, जिससे उनकी कलात्मक धरोहरों पर असर पड़ा।

संरक्षण प्रयास:
• छत्तीसगढ़ सरकार और NGO-समूह पारंपरिक शिल्प और नृत्य को संरक्षित करने के लिए प्रशिक्षण, प्रदर्शनी और दस्तावेजीकरण कार्यक्रम चला रहे हैं।
• स्थानीय कलाकारों को GI टैग और बाजार तक पहुँच उपलब्ध कराने के प्रयास जारी हैं।

6.2 महाराष्ट्र (वारली आदिवासी): वैश्विक पहचान प्राप्त कर चुकी जनजातीय कला

ऐतिहासिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि : वारली समुदाय मुख्यतः महाराष्ट्र के दहाणू, पालघर और ठाणे जिलों में रहता है। वारली चित्रकला की उत्पत्ति प्रागैतिहासिक गुफा चित्रों से मानी जाती है।

मुख्य कला रूप:
• **वारली पेंटिंग (Warli Art) :** यह ज्यामितीय रूपों त्रिभुज, वृत्त और रेखा से बनी एक सरल लेकिन गहरी सांस्कृतिक शैली है।
मुख्य विषय हैं:
- कृषि गतिविधियाँ
- विवाह समारोह (विशेषकर *लग्नचित्र*)
- प्राकृतिक जीवन
- त्योहार और देव-पूजन
- तारण, नृत्य और सामूहिक कार्य

सामाजिक-सांस्कृतिक महत्व:
• यह कला समुदाय की **सामूहिक स्मृति**, पारिवारिक संरचना और दैनिक जीवन की धुरी है।
• चित्रों में स्त्री आकृतियाँ विशेष रूप से दिखाई देती हैं, जो वारली समाज में महिलाओं की केंद्रीय भूमिका को दर्शाती हैं।

आधुनिक परिवर्तन :

• शहरी बाजार और पर्यटन उद्योग के बढ़ने से अब यह कला दीवारों के साथ-साथ कैनवस, कपड़ों, घरेलू सजावट और डिजिटल माध्यमों में भी दिखाई देती है।
• इससे कलाकारों को आर्थिक लाभ मिला है, किंतु कई पारंपरिक प्रतीक और शुद्ध धार्मिक विषय लुप्त होने लगे हैं।

संरक्षण चुनौतियाँ और समाधान:

• नकली वारली कला का बाजार बढ़ने से स्थानीय कलाकारों की आजीविका प्रभावित होती है।
• UNESCO और राज्य सरकार ने वारली कला को "अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर" के रूप में सूचीबद्ध करने की दिशा में प्रयास किए हैं।
• कई स्वयंसेवी संगठन कलाकारों को प्रशिक्षण और डिज़ाइन इनोवेशन में सहयोग देते हैं।

6.3 झारखंड (सोहराय कला, संथाल संगीत और नृत्य): प्रकृति-आधारित सांस्कृतिक जीवन

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि : झारखंड में संथाल, हो, मुंडा, उराँव और कुंड जैसे समुदाय रहते हैं। इनकी कला प्रकृति, कृषि और आध्यात्मिकता से गहराई से जुड़ी है।

मुख्य कला रूप:

• **सोहलाई/सोहराय पेंटिंग :** यह त्यौहार आधारित चित्रकला है, जो फसल कटाई, पशुपालन और प्राकृतिक चक्रों का उत्सव है।

- पशु आकृतियाँ
- वृक्ष
- सूर्य-चंद्र
- स्त्री आकृतियाँ

  ये सोहलाई कला में प्रमुख हैं।

• **संथाल संगीत और नृत्य :** संथाल समुदाय के **डोंडो, तमक, ढोल, बांसुरी, नृत्य और गीत** सामाजिक जीवन का केंद्र हैं। Karam, Sohrai, Sarhul आदि उत्सवों में सामूहिक नृत्य अत्यंत महत्वपूर्ण होता है।

सामाजिक संरचना पर प्रभाव:

• नृत्य और संगीत सामाजिक एकता और समुदायिक अनुशासन को बनाए रखते हैं।
• बुजुर्गों द्वारा कथाओं और मिथकों का वाचन युवा पीढ़ी को संस्कृति से जोड़ता है।

आधुनिक चुनौतियाँ:

• विकास परियोजनाओं, खनन और बड़े बांधों के कारण कई समुदायों का **विस्थापन** हुआ है, जिससे परंपरागत कला स्थल नष्ट हुए।
• बाजार आधारित संस्कृति से पारंपरिक सामुदायिक नृत्य और गीतों में बदलाव आया है।
• युवा पीढ़ी शहरों में रोजगार के लिए जाने लगी है, जिससे कला परंपरा का हस्तांतरण प्रभावित होता है।

सकारात्मक परिवर्तन और संरक्षण प्रयास:

• झारखंड सरकार और सांस्कृतिक संगठनों ने *झारखंड कला उत्सव, लोक महोत्सव* और *सामुदायिक कला प्रशिक्षण शिविर* शुरू किए हैं।
• सोहराय कला की महिलाओं को कला-आधारित आजीविका योजनाओं से जोड़ा गया है।
• कई कलाकार अंतरराष्ट्रीय प्रदर्शनियों में भाग लेकर वैश्विक पहचान पा रहे हैं।

7. आधुनिकता और आदिवासी कला में चुनौतियाँ : आधुनिकता के प्रभाव से आदिवासी कला संरक्षण, नवाचार और बाजार विस्तार के नए अवसरों के साथ-साथ प्रामाणिकता, संसाधन कमी और सांस्कृतिक विस्थापन जैसी चुनौतियों का सामना कर रही है।

7.1 वैश्वीकरण और बाजार : वैश्वीकरण ने कला को अंतरराष्ट्रीय मंच दिया, परंतु बाजार-अनुकूल डिज़ाइनों के कारण पारंपरिक प्रतीक, तकनीकें और प्राकृतिक रंगों का उपयोग घट रहा है। व्यावसायिक पुनरुत्पादन से कला की सांस्कृतिक गहराई और आध्यात्मिकता प्रभावित होती है। NGO और निजी संस्थानों द्वारा मानकीकरण कला की विशिष्टता कम करता है।

7.2 शहरीकरण और युवा पीढ़ी : पलायन और औपचारिक शिक्षा में पारंपरिक कला की उपेक्षा से नई पीढ़ी हस्तकला से दूर हो रही है। कला "जीवन-परंपरा" से "आर्थिक गतिविधि" में बदल रही है, और तकनीकी माध्यमों ने पारंपरिक दक्षता के प्रति रुचि घटाई है।

7.3 पर्यावरणीय परिवर्तन : वनों की कमी, खनन और भूमि अधिग्रहण ने कच्चे माल की उपलब्धता को प्रभावित किया है, जिससे ढोकरा, बाँस शिल्प और प्राकृतिक रंगों पर आधारित चित्रकला संकट में है। पर्यावरणीय बदलावों ने ऋतु-आधारित उत्सवों और कला-विधियों की प्रकृति भी बदल दी है।

7.4 विस्थापन और विकास परियोजनाएँ : बड़े विकास-प्रोजेक्ट सांस्कृतिक स्थल, कला-उत्पादन क्षेत्रों और सामुदायिक अनुष्ठानों को टूट-फूट की ओर ले जाते हैं। पुनर्वास की प्रक्रिया कला-परंपराओं की निरंतरता को बाधित करती है।

7.5 सांस्कृतिक वाणिज्यीकरण : कई कंपनियाँ आदिवासी कला का उपयोग व्यावसायिक ब्रांडिंग के रूप में करती हैं, जिससे कलाकारों का आर्थिक शोषण होता है। कॉपीराइट संरक्षण की कमी भी एक प्रमुख समस्या है।

7.6 सकारात्मक पहल : डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म, ई-कॉमर्स, ऑनलाइन प्रदर्शनियाँ, GI Tags, सरकारी हस्तशिल्प मेले और Tribal Studies कार्यक्रम कला को संरक्षण और नए अवसर प्रदान कर रहे हैं।

7.7 विश्लेषण : आदिवासी कला आधुनिकता में द्विआधारी स्थिति में है—एक ओर अवसर और नवाचार, दूसरी ओर संसाधन कमी, बाजार दबाव और सांस्कृतिक अस्मिता पर खतरा। भविष्य में संरक्षण के लिए समुदाय-केंद्रित, पर्यावरण-अनुकूल और सांस्कृतिक अधिकारों पर आधारित मॉडल आवश्यक है।

8. निष्कर्ष : आदिवासी कला केवल एक सांस्कृतिक धरोहर नहीं, बल्कि भारत की सामाजिक संरचना, सामुदायिक स्मृति और पारंपरिक ज्ञान प्रणालियों की जीवंत अभिव्यक्ति है। आदिवासी समुदाय अपनी कला के माध्यम से प्रकृति, आध्यात्मिकता, कृषि जीवन, मिथकों, अनुष्ठानों और सामाजिक मूल्यों को अभिव्यक्त करते हैं। यह कला उनके जीवन का अभिन्न अंग है घर की दीवारों से लेकर धार्मिक कार्यों, कृषि चक्र, विवाह समारोहों और त्योहारों तक। शोध में यह स्पष्ट हुआ कि आदिवासी कला **स्थिर, जड़ या अपरिवर्तनीय** नहीं है; बल्कि यह **गतिशील, अनुकूलनशील और निरंतर विकसित होती हुई परंपरा** है। आधुनिकता, डिजिटल माध्यम, वैश्विक बाजार, पर्यटन, शहरीकरण और विकास परियोजनाओं ने एक ओर कला को नए अवसर दिए हैं जैसे रोजगार, अंतरराष्ट्रीय पहचान और संरक्षण दूसरी ओर पारंपरिक प्रतीकों के क्षरण, व्यावसायिकरण, विस्थापन और संसाधनों की कमी जैसी गंभीर चुनौतियाँ भी सामने आई हैं।

इसके बावजूद, आदिवासी कला की शक्ति उसकी **सांस्कृतिक पुनरुत्पादन क्षमता** में निहित है। मौखिक परंपराएँ, गीत, नृत्य, कथा, प्रतीक, डिज़ाइन और शिल्प कौशल समुदाय के भीतर लगातार स्थानांतरित होते रहते हैं। विशेष रूप से महिलाएँ कला के संरक्षण में केंद्रीय भूमिका निभाती हैं वे शिल्प, चित्रकला, नृत्य, गीत और पारंपरिक अनुष्ठानों की प्रमुख संवाहक हैं।

इस शोध से यह भी स्पष्ट हुआ कि आदिवासी कला आज "ह्रास" और "नवाचार" दोनों की प्रक्रिया से गुजर रही है। संरक्षण तभी संभव है, जब इसे **केवल व्यावसायिक उत्पाद** के रूप में नहीं, बल्कि **सांस्कृतिक अस्तित्व, पहचान और ज्ञान प्रणाली** के रूप में समझा जाए। अतः आवश्यक है कि आदिवासी कला को संरक्षण, शिक्षा, सांस्कृतिक अधिकारों और समुदाय-केंद्रित विकास के ढाँचे में प्राथमिकता दी जाए।

9. शोध सिफारिशें (Condensed Recommendations)

1. **भाषा और कला संरक्षण**
   - आदिवासी भाषाओं और कला को स्कूल और कम्युनिटी आर्ट स्कूलों में शामिल करें।
   - वरिष्ठ कलाकारों द्वारा युवा पीढ़ी को प्रशिक्षण दें।
2. **पर्यटन और सांस्कृतिक संतुलन**
   - कला को केवल प्रदर्शनी वस्तु न बनाकर समुदाय-नेतृत्व वाले मॉडल अपनाएँ।
   - आय का हिस्सा कला संरक्षण और सांस्कृतिक गतिविधियों में निवेश करें।
   - जिम्मेदार पर्यटन और पारंपरिक प्रतीकों का संरक्षण सुनिश्चित करें।
3. **डिजिटल माध्यमों का उपयोग**
   - कला का डिजिटलीकरण, वर्चुअल म्यूजियम और 3D रिकॉर्डिंग।
   - ऑनलाइन मार्केटप्लेस प्रशिक्षण और QR-based प्रामाणिकता।
   - ओपन-सोर्स प्लेटफॉर्म पर तकनीक और कथाओं का दस्तावेज़ीकरण।
4. **शिक्षा में समावेशन**
   - NEP-2020 के तहत आदिवासी ज्ञान और कला को पाठ्यक्रम में शामिल करें।
   - विश्वविद्यालयों में Tribal Art Research Centres और संग्रहालय स्थापित करें।
   - कला-आधारित नवाचार और शिक्षण सामग्री विकसित करें।
5. **महिलाओं की सशक्त भागीदारी**
   - प्रशिक्षण, वित्तीय सहायता और उद्यमिता के अवसर दें।
   - SHGs और मंचों के माध्यम से बाजारीकरण और दस्तावेज़ीकरण।
6. **सांस्कृतिक अनुसंधान और दस्तावेज़ीकरण**
   - Ethnography, Visual Anthropology और अनुसंधान के माध्यम से कला का गहन अध्ययन।
   - Tribal Art Archives और GI टैग, कॉपीराइट सुरक्षा।
   - अंतरराष्ट्रीय सहयोग के जरिए संरक्षण मॉडलों का कार्यान्वयन।
7. **नीतिगत हस्तक्षेप और समुदाय-केंद्रित विकास**
   - कला संरक्षण को ग्रामीण आजीविका से जोड़ें।
   - समुदाय की सहमति के बिना विकास परियोजनाएँ न करें।
   - Tribal Cooperatives और Art Boards के माध्यम से नियंत्रण और मूल्य निर्धारण।
8. **पर्यावरणीय संरक्षण और संसाधनों की उपलब्धता**
   - कच्चे माल और प्राकृतिक रंगों के संरक्षण हेतु संयुक्त कार्यक्रम।
   - पर्यावरणीय प्रभावों के अध्ययन के लिए Environmental Humanities का उपयोग।

10. संदर्भ :

1. Assmann, Jan. Cultural Memory and Early Civilization. Cambridge University Press, 2011.
2. Béteille, André. The Idea of Natural Inequality. Oxford University Press, 2006.
3. Berkes, Fikret. Sacred Ecology. Routledge, 2012.
4. Bhatta, R. Regional Tribal Art and Cultural Identity. Oxford University Press, 2018.
5. Ghurye, G.S. The Scheduled Tribes. Popular Prakashan, 2010.

6. Mohanty, Ajit K. The Multilingual Reality: Living with Languages. Multilingual Matters, 2019.
7. Throsby, David. "Cultural Sustainability." International Journal of Cultural Policy, 2018.
8. Xaxa, Virginius. State, Society and Tribes. Pearson, 2014.
9. Fernandes, Walter. India's Forced Displacement Policy. ISI Publications, 2009.
10. Elwin, Verrier. The Tribal Art of Middle India. Oxford University Press, 1951.
11. Coates, Karen. Indigenous Arts in Contemporary Society. Routledge, 2015.
12. Devi, Mahasweta. Tribal Culture in India. Seagull Books, 1990.
13. Sarkar, Sumona. "Warli Art and Its Socio-Cultural Dimensions." Indian Anthropologist, vol. 48, no. 2, 2018.
14. Pingle, Urmila. Gonds of Central India. Concept Publishing, 2014.
15. Pathy, J. Tribal Art and Aesthetics. National Museum Publication, 2008.
16. Tiwari, R.K. "Sohrai and Khovar Art Traditions of Jharkhand." Journal of Indian Folklore, 2017.
17. Dutta, Prabir. Folk Narratives and Tribal Knowledge Systems. Rawat Publications, 2020.
18. Roy, Sarat Chandra. The Mundas and Their Country. Asia Publishing House, 1995.
19. Mehta, R. "Bastar Art Forms and Social Life." South Asian Studies Review, 2016.
20. Sen, Amita. "Indigenous Women and Cultural Preservation." Gender, Culture and Society Journal, 2019.
21. Nair, Shalini. Indian Indigenous Knowledge Systems. Sage Publications, 2017.
22. Singh, K.S. The Scheduled Tribes of India: Anthropological Survey of India. Oxford University Press, 1994.
23. Tripathi, R. "Tribal Paintings of India: A Comparative Study." Journal of Arts and Culture, 2015.
24. Jain, Jyotindra. Indian Folk and Tribal Art. Niyogi Books, 2011.
25. Mazumdar, Aruna. "Music and Ritual in Tribal India." Ethnomusicology Today, 2013.
26. Chaudhuri, Buddhadeb. Tribal Transformation in India. Inter-India Publications, 2012.
27. Basu, Manisha. "Globalization and Tribal Crafts." Cultural Dynamics, 2020.
28. Murmu, Hembram. Santhal Oral Traditions and Cultural Heritage. Tribal Research Centre, 2018.
29. Pradhan, R. "Ecological Knowledge in Tribal Practices." Journal of Environmental Anthropology, 2014.
30. Lakra, M. Indigenous Dance Forms of Central India. Tribal Studies Press, 2019.
31. Sharma, Sushma. "Tourism and Tribal Art Commercialization." Cultural Economics Review, 2021.
32. Rai, Anamika. Tribal Crafts and Sustainable Livelihoods in India. Springer, 2022.

•